11. आख़री मोहयाल शासक और धर्म के लिये शहीद: बन्दा वीर बैरागी

मुग़ल राज के विरुद्ध कई ओर से विरोध हो रहा था और औरंगज़ेब दक्षिण भारत में हो रहे उपद्रवों को पूरी तरह दबा नहीं सका. उसके निधन पर उसका बेटा बहादुर शाह भारी सेना लेकर दक्षिण की ओर गया. गुरु गोविन्दसिंह भी उसके पीछे गए पर नांदेड़ (महाराष्ट्र) तक जा कर वहां रुक गए. संयोगवश वहां उनकी भेंट एक और छिब्बर जाति के पंजाबी मोहयाल ब्राह्मण से हुई.

आजकल के जम्मू प्रांत की सीमा पर एक छोटा सा "मेंढर" नाम का गांव है. 27 अक्तूबर, 1670 ई को वहां रामदेव छिब्बर के बेटे लच्छमन देव ने जन्म लिया. बड़ा हो कर जब वह समीप में एक पहाड़ी पर शिकार कर रहा था उसके तीर से एक गर्भवती हिरणी ज़ख़्मी हो गयी ओर उसके गर्भ से दो बच्चे गिर कर तड़पते हुए मर गए. उनकी व्यथा को देखकर लच्छमन देव का मन बहुत विचिलित हुआ. इस जीवन की नश्वरता पर गहन विचार कर, राजौरी के बाबा जानकीदास द्वारा दीक्षा लेकर वह सन्यासी हो गया. घोर तपस्या और कई साधू संतों की संगति के पश्चात वह गोदावरी नदी के तट पर नासिक पहुंचा. वहां योगी ओघरनाथ द्वारा दीक्षा दिए जाने पर वह माधवदास नाम से बैरागी बन गया. उसके पंद्रह वर्ष पश्चात गुरू गोविन्दसिंह वहां आये तो, सितंबर 1708 ई में उनका मिलाप माधवदास बैरागी से हुआ. पंजाब में कई छिब्बर, गुरू के संग युद्धों में बलिदान दे चुके थे: दीवान साहिब चन्द, दीवान धर्म चन्द ओर मुकंद राय आदि. यहां इतनी दूर छिब्बर जाति का ही एक विचित्र व्यक्तित्व का "बन्दा" बैरागी उनके जीवन से जुड़ गया.

गुरू गोविन्दसिंह ने पंजाब में मुग़ल अत्याचारों के विरोध में हो रहे संघर्ष से बैरागी को अवगत कराया. उन्हों ने अपने दो बेटों को चमकौर के युद्ध में शहीद होते देखा था ओर फिर दो छोटे बेटों की, सरहिंद के मुग़ल गवर्नर द्वारा, ज़िंदा दीवार में चुने जाने की सूचना मिली थी. सम्भवता इस बैरागी ने गुरू की आँखों में उनके बच्चों के विनाश की वही पीड़ा देखी जो एक दिन तड़पते नवजात बच्चों को देखकर मरती हुई हिरणी की आंखों में थी. एक बार फिर उसके जीवन की दिशा बदल गयी. लच्छमन देव छिब्बर, उपनाम माधोदास बैरागी, अब गोविन्दसिंह का "बंदाबहादुर" बनकर, एक योधा के रूप में, मुग़ल अत्याचारों के प्रतिशोध के लिए पंजाब की ओर चल पड़ा. दिल्ली के समीप सहर खांडा पहुंच कर गुरू का हुकमनामा हर ओर भेजा. सिख आकर बन्दा वीर बैरागी के नेतृत्व में एकत्रित होने लगे.

बन्दा ने सोनीपत, सामना, ठसका, शाहबाद और मुस्तफाबाद आदि जीत कर सरकारी कोषों का धन अपने सैनिकों में बाँट दिया. परन्तु सिखों का मन तो सरहिन्द के गवर्नर वज़ीर खान से बदला लेने के लिए उबल रहा था. वज़ीर खान अपना तोपखाना और सेना लेकर सरहिन्द से निकल कर छपर-चीरी गाँव के पास बन्दा से युद्ध करने के लिए आ गया. तोपों के सामने जब निहत्थे सिख डगमगाने लगे तो बन्दा ने आगे आकर स्वयं आक्रमण की अगुवाई की. वज़ीर खान मारा गया और बन्दा पूरी तरह विजयी रहा. उसके तीन दिन पश्चात बन्दा ने सरहिन्द पर आक्रमण किया और अपने "लै के वैर गुरू पुत्रों दा .... जानउ मुझे तब ही "गुरू बन्दा" वचन पूरा किया.

जालंधर, होशियारपुर आदि क्षेत्रों में बड़े मुस्लिम ज़मींदारों की ज़मीनें सिखों में बाँट दीं सतलुज से यमुना नदियों के बीच के क्षेत्र पर बन्दा का पूर्ण आधिपत्य हो गया जहां कर से 36 लाख रुपये की आय थी. बन्दा वीर बैरागी, गुरु नानक और गुरू गोबिंदसिंह के नाम पर सिक्के बना कर पूरे शाही ठाठ से राज करने लगा. वहां से मुग़ल प्रभुत्व उस समय पूरी तरह समाप्त हो गया था .

दिल्ली में राज गद्दी के लिए संघर्ष चल रहा था. बहादुरशाह और उसके उत्तराधिकारी, जहांदार शाह (1712) और फर्रख सिय्यार (1713), जब भी उनको समय मिलता था सेना भेज कर बन्दा को पकड़ने के अभियान चलाते रहे. अंततः 7 दिसंबर, 1715 को, गुरदासपुर के पास गुरदास नंगल में बन्दा और उसके साथी वीरता के साथ लडते हुए पकड़ लिए गए.

इस्लामिक पद्धिति के अनुसार उनको इस्लाम कबूल करने या मृत्यु की सज़ा सुनाई गयी. बन्दा और उसके साथियों ने धर्म परिवर्तन से इनकार कर दिया. बन्दा के शिशु बालक को निर्दयता से मार कर उसका फड़फड़ाता हृदय बाप के मुंह में ठोसा गया. बन्दा का एक एक अंग – हाथ, पैर, आँखें – उसके जीवित शरीर से काटे गए और फिर उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिए. बन्दा वीर बैरागी शांत मन से यह सब सहन करता हुआ अपने आराध्य देव के चरणों में लीन हो गया.

पंजाब में हिन्दू साम्राज्य की रक्षा करते हुए, ग्यारहवीं शताब्दी में, मोहयालों के पूर्वज शहीद हुए थे. मोहयालों का 'भाग्य' के साथ साक्षात्कार का वचन था. अब एक मोहयाल सपूत ने उसी सम्प्रभुता को वापिस छीन कर मुग़लों के अजय होने के भ्रम को तोड़ा. इस क्षेत्र में स्वदेशी राज की नींव डाल दी थी जिस से अंततः पंजाब में सिख राज स्थापित हो सका.
अब एक और मोहयाल देश के लिए बलिदान हो गया था.

पुनश्च: - 1899 ई में रविन्द्र नाथ टैगोर ने इस बैरागी की शहादत के वृतांत से प्रभावित हो कर एक मार्मिक कविता "बन्दी बीर" (बहादुर कैदी) लिखी. परन्तु देश तो उसे भूल ही गया. सिख समुदाय ने भी बाबा बन्दा सिंह बहादुर को याद करने में बहुत देरी कर दी. छपर चीरी पर, जहां बन्दा ने मुग़ल शक्ति को पराजित किया था, एक भव्य "फतह बुर्ज" बनाया गया है. पर इस वर्ष (20016) तो जैसे पंजाब, हरयाणा और दिल्ली के मुख्य मंत्रियों में बन्दा की तृतीय-शताब्दी बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों में होड़ सी लग गई है. भारत के गृह मंत्री और प्रधान मंत्री भी आमंत्रित किये जा रहे हैं.

यदि मोहयाल अपने इस सपूत को याद रखते और उस के मोहयाल छिब्बर होने का प्रचार करते तो सभी मुख्य मंत्री मोहयाल नेताओं को इन समारोहों में विशेष रूप से आमंत्रित करते : उसी प्रकार जैसे "शहीद भाई मती दास मैमोरियल ट्रस्ट" चंडीगढ़ की स्थापना में मोहयाल शीर्ष नेताओं की विशेष भूमिका थी.